vinetur

# फ्रांस की आधी वाइन कंपनियां नकदी प्रवाह की गंभीर समस्या से जूझ रही हैं

उत्पादकों का कहना है कि चरम मौसम की बार-बार होने वाली घटनाओं ने संकट को लगभग हर वाइन क्षेत्र तक फैला दिया है और मांग में लंबी गिरावट को गहरा किया है।

गुरुवार, 8 अक्टूबर 2026



कम होती खपत, नकदी प्रवाह पर बढ़ते दबाव और बार-बार जलवायु संबंधी झटकों के कारण फ्रांस का वाइन उद्योग लगातार दबाव में है। उत्पादकों का कहना है कि वर्षों से गहराता संकट अब देश के लगभग हर वाइन क्षेत्र को अपनी चपेट में ले रहा है।

भीषण गर्मी और सूखे से भरी गर्मियों के बाद, उद्योग के अधिकारियों के अनुसार 2026 की फसल घट गई है। Terre de Vins और AFP ने इन अधिकारियों के हवाले से यह जानकारी दी। वाइन उत्पादकों का कहना है कि अब समस्या कुछ अलग-अलग खराब वर्षों तक सीमित नहीं है, बल्कि बार-बार चरम मौसम की घटनाओं का एक नया सिलसिला बन गई है, जिससे हर अगले मौसम में उत्पादन जारी रखना अधिक कठिन हो रहा है।

AFP की रिपोर्ट के अनुसार, सार्वजनिक कृषि एजेंसी FranceAgriMer की वाइन परिषद के प्रमुख और Hérault क्षेत्र के वाइन उत्पादक Jérôme Despey ने कहा, "हर साल जलवायु हमें झकझोर देती है।" उन्होंने कहा कि Occitanie के उत्पादक पांच साल से एक के बाद एक नुकसानदेह घटनाओं का सामना कर रहे हैं। उनके मुताबिक, हाल के दिनों में यह क्षेत्र सूखे से निकलकर भूमध्यसागरीय क्षेत्र में हुई भारी बारिश की चपेट में आया, जिसमें 12 घंटों में 200 मिलीमीटर से अधिक पानी बरसा।

इस तरह के उतार-चढ़ाव से पहले भी नुकसान हो चुका है। 2025 में अगस्त की गर्मी और सूखे ने Charentes से Bordeaux और पूरे Languedoc-Roussillon तक फसल घटा दी थी। 2024 में अन्य क्षेत्रों में अत्यधिक बारिश, देर से पड़े पाले और कुछ जगहों पर सूखे का असर हुआ। साथ ही, बढ़ते तापमान वाइन बनाने की परिस्थितियों को भी बदल रहे हैं।

घरेलू मांग कमजोर पड़ने के बीच उद्योग जलवायु के इस दबाव का सामना कर रहा है। फ्रांस यूरोपीय संघ का सबसे बड़ा वाइन-खपत वाला देश और अपनी वाइन का मुख्य बाजार बना हुआ है, लेकिन घरेलू खपत कई दशकों से घट रही है। अंतरराष्ट्रीय अंगूर एवं मदिरा संगठन के अनुसार, 2025 में फ्रांस में वाइन की खपत एक साल पहले की तुलना में 3.2% और गिर गई।

इस गिरावट के पीछे घरेलू क्रय शक्ति में कमी, पीने की बदलती आदतें और रेड वाइन की कमजोर मांग के साथ-साथ पीढ़ीगत बदलाव भी हैं। Despey ने कहा कि उपभोक्ता जब खर्च के बीच चुनाव करते हैं, तो वाइन प्रभावित हो रही है—संभवतः कुछ अन्य उत्पादों से भी अधिक। उन्होंने यह भी कहा कि उत्पादकों को अपनी पेशकश को मौजूदा मांग के अनुरूप ढालना होगा, जिसमें हल्की, अधिक ताज़गीभरी और अल्कोहल हटाई गई वाइन शामिल हैं।

उन्होंने कहा कि मुख्य चुनौती यह नहीं है कि बदलाव किया जाए या नहीं, बल्कि यह है कि क्षेत्र कितनी तेजी से ऐसा कर सकता है। उन्होंने कहा कि वे खपत में सुधार का अनुमान नहीं लगा रहे, लेकिन उपभोक्ताओं की पसंद के मुताबिक ढलकर गिरावट की रफ्तार धीमी करने की कोशिश उत्पादकों को कम से कम करनी चाहिए।

निर्यात घरेलू बाजार की सुस्ती की भरपाई नहीं कर पाया है। रिपोर्ट के अनुसार, 2025 में फ्रांसीसी वाइन का विदेशों में निर्यात 3% और घटा, हालांकि स्पार्कलिंग वाइन का प्रदर्शन मजबूत रहा और उसका निर्यात 3% बढ़ा। उत्पादकों का कहना है कि प्रमुख निर्यात बाजारों में आर्थिक कमजोरी और अमेरिका में बढ़े शुल्क के कारण विदेशों में बिक्री प्रभावित हुई है। अमेरिका अब भी फ्रांसीसी वाइन का सबसे बड़ा निर्यात बाजार है।

इस दबाव का असर उद्योग की संरचना पर भी दिख रहा है। अतिरिक्त आपूर्ति घटाने के लिए फ्रांस ने बेलें उखाड़ने की कई योजनाओं को वित्तपोषित किया है और इस साल की नवीनतम योजना में 27,000 हेक्टेयर शामिल थे। इससे देश का अंगूर-बाग क्षेत्रफल पांच साल पहले के लगभग 800,000 हेक्टेयर से घटकर 740,000 हेक्टेयर रह गया। कटौती का असर मुख्य रूप से Bordeaux, Southwest और Occitanie में पड़ा, जबकि कुछ अन्य क्षेत्र कम प्रभावित हुए और कुछ में अब भी विस्तार हो रहा है।

बेलें हटाने का मतलब हर बार व्यवसाय बंद होना नहीं है। रिपोर्ट के अनुसार, संबंधित भूमि के लगभग दो-तिहाई हिस्से को अन्य गतिविधियों के लिए इस्तेमाल किए जाने की उम्मीद है, जिससे अतिरिक्त उत्पादन घटाने में भी मदद मिलेगी। उदाहरण के लिए, Bordeaux में सफेद वाइन का दायरा बढ़ा है। मीठी वाइन को छोड़कर, अंगूर-बाग क्षेत्रफल में इसका हिस्सा 2016 के 9.3% से बढ़कर 2025 में 13% हो गया, जिसमें crémant का हिस्सा भी बढ़ा।

खेतों की संख्या में भी लगातार गिरावट आई है। कृषि मंत्रालय के अनुसार, 2020 में फ्रांस में वाइन उत्पादन से जुड़ी 59,000 इकाइयां थीं, लेकिन 2023 में यह संख्या घटकर 53,000 रह गई। इसके बावजूद, वाइन क्षेत्र का कहना है कि यह देशभर में करीब 500,000 नौकरियों को सहारा देता है।

वित्तीय दबाव अब एक बड़ी चिंता बन गया है। Vignerons Indépendants की वेधशाला के अनुसार, हर दो में से एक व्यवसाय का कहना है कि वह फिलहाल नकदी प्रवाह की गंभीर समस्या से जूझ रहा है। दबाव का यह स्तर केवल अंगूर-

बाग मालिकों ही नहीं, बल्कि बोतलबंद करने वाली कंपनियों, लॉजिस्टिक्स सेवा प्रदाताओं, वितरकों और पेय कारोबार से जुड़ी अन्य कंपनियों के लिए भी सवाल खड़े करता है। यदि यह दबाव बना रहता है, तो इससे वाइन कारोबार में पुनर्गठन तेज हो सकता है और पूरे पेय क्षेत्र के आपूर्तिकर्ता प्रभावित हो सकते हैं।

Vignerons Indépendants संघ के प्रमुख Jean-Marie Fabre ने कहा कि जलवायु जोखिम सबसे अधिक अस्थिरता पैदा करने वाला कारक है, क्योंकि इस साल इसका असर सभी क्षेत्रों पर पड़ रहा है। वह अंगूर-बागों के लिए कम से कम एक राष्ट्रीय सुरक्षा कार्यक्रम की मांग कर रहे हैं, जिसमें ओलावृष्टि-रोधी जाल, पाले से बचाव के तार या टावर और पानी भंडारण प्रणालियों जैसे उपाय शामिल हों।

Fabre ने कहा कि इसके लिए पांच वर्षों में 4 अरब यूरो के बजट की जरूरत होगी। इसमें से आधा यूरोपीय संघ की साझा कृषि नीति से और बाकी राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय सार्वजनिक निधियों से आना चाहिए। उन्होंने तर्क दिया कि क्षेत्र पांच साल से संकटों के लगातार बढ़ते बोझ से जूझ रहा है और अब निर्णायक मोड़ पर पहुंच गया है। उनके विचार में, सार्वजनिक नीति को आपदाओं के बाद खर्च करने पर मुख्य रूप से ध्यान देना बंद कर रोकथाम में अधिक निवेश करना चाहिए।

संघ यह भी मांग कर रहा है कि पारिवारिक अंगूर-बागों को अगली पीढ़ी को सौंपने पर कर का बोझ कम किया जाए। यह मांग उस क्षेत्र में उत्तराधिकार को लेकर चिंता दर्शाती है, जहां लाभ का मार्जिन दबाव में है और संचालकों की संख्या घट रही है। उत्पादकों का कहना है कि हस्तांतरण आसान न होने पर कुछ पारिवारिक संपदाएं नए मालिकों के तहत सक्रिय बने रहने के बजाय खत्म हो सकती हैं।

फ्रांस की वाइन इंडस्ट्री में जारी बदलाव का असर अलग-अलग श्रेणियों और क्षेत्रों पर समान रूप से नहीं पड़ रहा है। निर्यात में स्पार्कलिंग वाइन ने अधिक मजबूती दिखाई है, जबकि कुछ उत्पादक सफेद वाइन और ऐसी अन्य शैलियों की ओर जमीन का रकबा बढ़ा रहे हैं जिन्हें वे बाजार की मांग के अधिक अनुरूप मानते हैं। लेकिन अंगूर उत्पादकों और व्यापार संगठनों का कहना है कि बदलाव के लिए पूंजी की जरूरत है, जबकि कई व्यवसायों के पास पहले से ही नकदी की कमी है और उन्हें बार-बार फसल जोखिमों का सामना करना पड़ रहा है।

कमजोर मांग, बार-बार मौसम से होने वाले नुकसान और वित्तीय नाजुकता का यह मेल लंबे समय से चल रहे बदलाव को पूरे उद्योग की बड़ी परीक्षा में बदल रहा है। ऐसे देश में जहां वाइन कृषि का एक प्रमुख उत्पाद और रोजगार का बड़ा स्रोत है, इसका नतीजा केवल अंगूर-बागों तक सीमित नहीं रहेगा। उत्पादन योजना और खुदरा आपूर्ति से लेकर फ्रांस भविष्य में किस तरह की वाइन बनाकर बेच सकेगा, उसमें दीर्घकालीन निवेश तक, पेय कारोबार के व्यापक हिस्से पर इसका असर पड़ेगा।